

# कथा सरिता

## अधिक आसान रास्ता

एक बार एक डाकू गुरु नानक के पास गया और उनके चरणों में गिरकर बोला, 'मैं अपने जीवन से परेशान हो गया हूँ। न जाने कितनों को मैंने लूटकर दुःखी किया है। मुझे कोई रास्ता बताइए ताकि मैं इस बुराई से बच सकूँ।'

गुरु नानक ने बड़े प्रेम से कहा, 'यदि तुम बुराई करना छोड़ दो तो बुराई से बच जाओगे।' गुरु नानक की बात सुनकर डाकू बोला, 'अच्छी बात है, मैं कोशिश करूँगा।' यह कहकर वह वापस चला गया। कुछ दिन बीतने के बाद वह फिर उनके पास लौट आया और बोला, 'मैंने बुराई छोड़ने की बहुत कोशिश की, लेकिन छोड़ नहीं पाया। अपनी आदत से मैं लाचार हूँ। मुझे कोई अन्य उपाय बताइए।'

गुरु नानक जी बोले, 'अच्छा, ऐसा करो कि तुम्हारे मन में जो भी बात उठे, उसे कर डालो, लेकिन रोज-रोज दूसरे लोगों से कह दो।' डाकू को बड़ी खुशी हुई कि इतने बड़े संत ने जो मन में आए सो कर डालने की आज्ञा दे दी। अब मैं बेधड़क डाका डालूँगा और दूसरों से कह दूँगा। यह तो बहुत आसान है। वह खुशी-खुशी उनके चरण छूकर घर लौट गया। कुछ दिनों बाद डाकू फिर उनके पास जा पहुंचा। गुरु नानक ने पूछा, 'अब तुम्हारा क्या हाल है?'

डाकू बोला, 'गुरुजी, आपने मुझे जो उपाय बताया था, मैंने उसे बहुत आसान समझा था, लेकिन वह तो निकला बड़ा मुश्किल। बुरा काम करना जितना मुश्किल है, उससे कहीं अधिक मुश्किल है दूसरों के सामने उसे कह पाना। इस काम में बहुत ज़्यादा कष्ट होता है।' इतना कहकर डाकू चुप हो गया और फिर बोला, 'गुरुजी, इसलिए अब दोनों में से मैंने आसान रास्ता चुन लिया है। मैंने डाका डालना ही छोड़ दिया है।' गुरु नानक मुस्करा दिए।

## बाधाएं करो समाप्त

एक स्वामीजी प्रतिदिन अपने आश्रम में वेदांत प्रवचन दिया करते थे। वहां प्रतिदिन एक खोमचेवाला भी आया करता था। एक दिन स्वामीजी ने कहा, 'परमात्मा हमसे कोई दूर थोड़े ही है। उसे तो हम तत्काल अनुभव कर सकते हैं।' यह सुनकर खोमचे वाला स्वामीजी के पास पहुंचा और बोला, 'महाराज! मैं प्रतिदिन आपके प्रवचन सुनता हूँ और सत्य पर आधारित जीवन बिताता हूँ। फिर मुझे परमात्मा की अनुभूति क्यों नहीं होती?' स्वामीजी ने उससे कहा, 'तुम अपने भीतर झाँको। कोई बाधा होगी, जिसके हटते ही तुम्हें ईश्वर का अनुभव हो जाएगा।' बात खोमचेवाले के मन में बैठ गई।

अगले दिन वह ठेके के पास खड़ा था। तभी उसने देखा, तेज़ धूप के चलते सड़क पर एक बूढ़ा आदमी अचानक चक्कर खाकर गिर पड़ा। खोमचेवाला दौड़कर उसके पास गया और उसे उठाकर पेड़ की छांव में लाया। होश में आने पर उसे ठंडा पानी पिलाया। वह बुजुर्ग व्यक्ति अब काफी राहत महसूस कर रहा था। वह समझ गया कि यह खोमचेवाले की सेवा का नतीजा है। वह कुछ कह तो नहीं सका, पर उसकी आँखों से आशीर्वाद रूपी जो अश्रु बहे, उसे अनुभव कर खोमचेवाला कृतार्थ हो गया। इससे उसे अपार शांति मिली। जिस अनुभव की उसे तलाश थी, वह उसे प्राप्त हो चुका था।

उसने स्वामीजी के पास जाकर सारा वृत्तांत सुनाया। स्वामीजी बोले, 'तुमने अहंकार त्यागकर निष्काम भाव से एक जीव की सेवा की, उससे तुम्हारी बाधा हट गई और तुम्हें परमात्मा का अनुभव हुआ। जीवन में अहंकार और कामना जैसे प्रतिबंध परमात्मा की अनुभूति में बाधक बनते हैं। यदि हम सब कुछ त्यागकर निष्काम भाव से सेवा कर सकें तो हमें अलौकिक आनंद की अनुभूति हो सकती है।'



**काठमाण्डु**। नेपाल के प्रधानमंत्री माननीय सुशील कोइराला को रक्षासूत्र बांधते के पश्चात् समूह चित्र में ब्र.कु. राज दीदी व अन्य ब्र.कु. भाई बहनें।



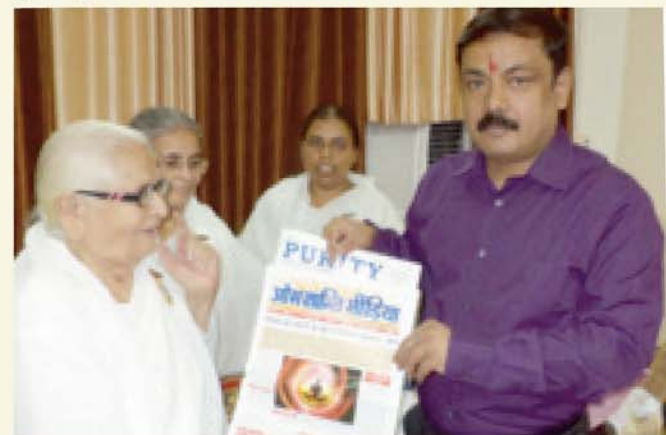
**दिल्ली-पाण्डव भवन**। सुप्रीम कोर्ट के न्यायाधीश जे.चेलमेश्वर को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. पुष्पा। साथ हैं न्यायाधीश वी. ईश्वरैया।



**नोएडा-से.33**। डॉ. महेश शर्मा, मिनिस्टर ऑफ स्टेट फॉर कल्चर, टूरिज्म एंड मिनिस्टर ऑफ स्टेट फॉर मिनिस्ट्री ऑफ सिविल एविएशन को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. मंजू।



**कासगंज-उ.प्र.**। डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट पी.विजेन्द्र पांडियन को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. सरोज।



**कानपुर-उ.प्र.**। ए.डी.एम. अविनाश सिंह को रक्षासूत्र बांधने के पश्चात् ओमशान्ति मीडिया पत्रिका व प्युरिटी पत्रिका भेंट करते हुए ब्र.कु. दुलारी, सेवाकेन्द्र प्रभारी, किदवई नगर। साथ हैं ब्र.कु. शशि व ब्र.कु. आरती।



**नूह-हरियाणा**। विधायक ज़ाकिर हुसैन को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. प्रियंका।

## गुणों की आहुति डालो

किसी नगर में एक विद्वान साधु रहता था। लोग उसके पास अपनी समस्याएं लेकर आते और वहां से प्रसन्न होकर लौटते। एक दिन एक सेठ साधु के पास आया और बोला, 'महाराज! मेरे पास सब कुछ है, फिर भी मन शांत नहीं रहता। मैं क्या करूँ?' साधु कुछ न बोला और उठ कर चल दिया। सेठ भी पीछे-पीछे चल पड़ा। आश्रम के एक खाली कोने में जाकर साधु ने वहां आग जलाई और धीरे-धीरे कर उस आग में एक-एक लकड़ी डालता रहा। हर लकड़ी के साथ आग की लौ तेज़ होती रही। कुछ देर बाद वह वहां से उठकर वापस अपनी जगह आकर चुपचाप बैठ गया। सेठ भी साधु के पास आकर बैठ गया।

लेकिन जब साधु ने उससे कुछ भी न कहा तो सेठ हैरान होकर बोला, 'महाराज! आपने मेरी समस्या का समाधान तो किया नहीं।' सेठ की बात सुनकर साधु मुस्कराते हुए बोला, 'मैं इतनी देर से तुम्हारी समस्या का समाधान ही बता रहा था। शायद तुम समझे नहीं। देखो, हर व्यक्ति के अंदर आग होती है। उसमें प्यार की आहुति डालें तो वह मन को शांति और आनंद देती है। यदि उसमें दिन-रात काम, क्रोध, लोभ, मोह और मद की लकड़ियां डाली जाती रहें तो वह मन में अशांति उत्पन्न करती हैं, आग को और भड़काती हैं। जब तक तुम अशांति फैलाने वाले इन तत्वों को आग में डालना बंद नहीं करोगे, तब तक तुम्हारा मन शांत नहीं होगा।' यह सुनकर सेठ की आँखें खुल गईं। वह प्रसन्न मन से साधु को नमस्कार कर अपने घर लौट आया। उसने भविष्य में अपने अंदर की आग में प्यार, करुणा और परोपकार की आहुति डालने का संकल्प कर लिया।

## सबसे महत्वपूर्ण एकाग्रता

स्वामी विवेकानंद और संस्कृत के जर्मन विद्वान पाल डायसन साहित्य पर चर्चा कर रहे थे। किसी कारणवश डायसन साहब को उठकर बाहर जाना पड़ा। विवेकानंद पास ही रखे कविताओं के एक संकलन को पढ़ने लगे। थोड़ी देर बाद प्रोफेसर डायसन अपना काम निबटाकर लौट आए। लेकिन विवेकानंद किताब पढ़ने में इस कदर खोए थे कि डायसन के लौट आने का उन्हें पता ही नहीं चला। डायसन को लगा कि विवेकानंद जान-बूझकर उन्हें नज़रअंदाज़ कर रहे हैं। पूरी किताब पढ़ने के बाद जब विवेकानंद ने अपनी गर्दन ऊपर उठाई तो डायसन को इंतज़ार करता पाया। वे बोले, क्षमा कीजिएगा, मैं पढ़ रहा था, इसलिए आप कब आए इसका पता ही नहीं चला। स्वामी विवेकानंद द्वारा माफी मांगने के बावजूद डायसन का मलाल खत्म नहीं हुआ। उन्हें यही लगता रहा कि विवेकानंद ने जानबूझकर उनकी उपेक्षा की है। विवेकानंद भी उनके मन का भाव जान गए। उन्हें अत्यंत दुःख हुआ। डायसन को यकीन दिलाने के लिए वे किताब की कुछ कविताएं सुनाने लगे। लेकिन इसका उल्टा ही असर हुआ। कविता की पंक्तियां सुनने के बाद डायसन ने कहा, लगता है आपने यह किताब पहले भी पढ़ी है। डायसन सोच रहे थे कि पूरे 200 पन्नों की किताब कोई इतने कम समय में कैसे पढ़ सकता है। वे बोले, किताब की सारी कविताएं आधे घंटे में याद हो जाना तो मुमकिन नहीं है। इस पर स्वामी विवेकानंद ने कहा, मिस्टर डायसन, आपको एक बात बताऊं, जीवन में सबसे महत्वपूर्ण है - एकाग्रता। हमारे काम करने में एकाग्रता जितनी अधिक होगी, हमारा समय उतना ही कम लगेगा और काम का परिणाम उतना ही ज़्यादा होगा। विवेकानंद की बात सुनकर डायसन समझ गए कि जो वह सोच रहे थे, वह ठीक नहीं था।